उत्तर :- प्रेमचंद एक आदर्शवादी कहानीकार थे। 'नमक का दरोगा' कहानी प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है। इसका प्रथम प्रकाश 1914 ई. में हुआ था। इसमें आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का पूर्ण उदाहरण प्रस्तुत है।

'नमक का दरोगा' यह कहानी में प्रेमचंद देश की प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार को साहसिक तरीके से उजागर करती है। इसका उदाहरण प्रेमचंद ने इस कहानी में वकील और मजिस्ट्रेट द्वारा दर्शाया है:- वकील द्वारा धन लेना और गलत व्यक्ति के पक्ष को उठाना समाज में भ्रष्टाचार को उजागर करता है वहीं मजिस्ट्रेट द्वारा पंडित अलोपीदीन के पक्ष में फैसला सुनाना, यह देश की प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था पर सवाल उठाता है। इस कहानी में वृद्ध मुंशी और शहर की भीड़ किसी न किसी सच्चाई को उजागर करते हैं:-

- वृद्ध मुंशी : वृद्ध मुंशी समाज में धन की महत्त को उजागर करते हैं। उनके अनुसार धन के बिना कुछ नहीं है। वे अपनी कमाई को अधिक महत्व देते हैं। यद्यपि यह एक मजबूर असहाय पिता का वक्तव्य है, पर हम इससे सहमत नहीं

Scanned by CamScanner

हो सकते। पाठ में वृद्ध मुंशी जी कहते हैं - "मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते - घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।" यह वाक्य एक पिता द्वारा पुत्र को किसी भी दशा में रिश्वतखोर होने का परामर्श देना सर्वथा अनुचित है।

• शहर की भीड़ :- कहानी में शहर की भीड़ यह दर्शाती है कि शहर की भीड़ सदैव दूसरों पर टीका - टिप्पणी करती रहती है। पाठ में कहा गया है- "भीड़ के शोर छत और दीवार में भेद न रह गया।"

कहानी में प्रेमचंद ने अपनी इस कहानी में महिलाओं एवं लड़कियों के प्रति लोगों की गलत सोच को भी दर्शाया है। वृद्ध मुंशी जी कहानी में कहते हैं, "लड़कियाँ हैं, वह घास - फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं।" यह वाक्य समाज में लड़कियों के विवाह और उसमें दिए जाने वाले दहेज की स्थिति की वास्तविकता को प्रकट

Scanned by CamScanner

करता है। यह वाक्य दर्शाता है कि लोग और समाज लड़कियों को बोझ मानते हैं। अगर हम अपने समाज एवं देश को आगे बढ़ाना है तो पहले अपनी बच्चियों को पढ़ाना होगा, अपनी लड़कियों को उनके पैरों पर खड़ा होना सीखाना होगा ताकि वह अपना गलत सही स्वयं सोच सके। यह धन के ऊपर धर्म की जीत की कहानी है।

प्रत्येक रचना का कोई-न-कोई संदेश अवश्य होता है। इस कहानी में कहानीकार प्रेमचंद अपनी रचनाओं के माध्यम से किसी-न-किसी विचारधारा को उभारना चाहते हैं। प्रेमचंद की प्रारंभिक कहानियों में आदर्शवादी दृष्टिकोण की प्रधानता रही है। यह आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रेमचंद ने कहानी में मुंशी वंशीधर द्वारा दर्शाया है। मुंशी वंशीधर एक ईमानदार, धर्मनिष्ठा, एवं कर्तव्यनिष्ठा से भरे हुए मनुष्य है। वह किसी भी प्रकार के लालच में नहीं आते तथा पंडित अलोपीदीन जैसे विख्यात व्यक्ति को भी गिरफ्तार करने का साहस दिखाते हैं। अंतत: उसकी ईमानदारी ने अलोपीदीन का हृदय-परिवर्तन कर दिया था।

Scanned by CamScanner

वह ईमानदारी का पुरस्कार पा जाता है। अलोपीदीन अपनी जायदाद का मैनेजर बना देता है। अंतत: यह कहानी में प्रेमचंद यह संदेश देना चाहते हैं कि सदैव असत्य, अन्याय, बेमानी और अनैतिक आचरण पर सत्य, न्याय, ईमानदारी और नैतिकता की विजय होती है।

निष्कर्ष :-

प्रेमचंद एक आदर्शवादी कहानीकार के रूप में इस कहानी को लिखा है लेकिन कहानी का अंत अस्वाभाविक प्रतीत होता है, आदर्श की विजय प्रदर्शित करने की धुन ने लेखक को यह सोचने का अवसर ही नहीं दिया कि अलोपीदीन जैसे भ्रष्ट व्यक्ति के पास एक ईमानदार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति वंशीधर का नौकरी करना तर्क संगत है अथवा नहीं। उद्देश्य की दृष्टि से इस कहानी को अधिक सफल नहीं कहा जा सकता है। एक प्रकार से धन ने धर्म को झुकाने में या उस पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली है। निष्कर्ष पर पुनः विचार करें।

Scanned by CamScanner